सन्त चरणदास और उनका साहित्य

डॉ. पिंकी यादव
व्याख्याता
बाबू शोभाराम राजकीय कला महाविद्यालय,
अलवर, (राज.)

साहित्य किसी भी समाज, धर्म, पन्थ व सम्प्रदाय का आयना होता है तथा उसे सही रूप में प्रस्तुत करने का सबसे अच्छा साधन होता है। जिसका साहित्य जितना अधिक होता है उसकी जानकारी भी उतनी ही समृद्धता व व्यापकता लिए हुए होती है। भारतीय समाज व धर्म में प्राचीन काल से ही साहित्य की समृद्धता रही है। और यही कारण है कि हम इसके आधार पर अपने मौलिक रूप को जान पाये है। साहित्य ने भारतीय संस्कृति धर्म को जानने में महत्वपूर्ण व अमूल्य योगदान दिया हे।[1] सन्त चरणदास 18वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध व 19वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में अवतरित एक अद्भुत ज्ञान एवं सिद्धि सम्पन्न लोकनायक थे।[2]

चरणदास जी सम्प्रदाय का साहित्य अत्यन्नत समृद्ध है तथा खुद चरणदास जी और उनके 108 प्रमुख बाना धारी शिष्यों, गद्दियों के संस्थापक शिष्यों और इन शिष्यों की शिष्य परम्पराओं ने सम्प्रदाय के संवर्द्धन निरूपमा, प्रचारण, प्रसारण तथा अन्य प्रकार के विकास कार्यों के साथ ही साहित्य सर्जन के प्रति भी अनुकरणीय कर्तव्य का निर्वहन किया है। साहित्य में भी केवल साधना सम्बन्धी साम्प्रदायिक तथा उपदेशमुलक साहित्य की रचना नहीं कि अपितु ललित साहित्य व शुद्ध काव्य की भी रचना की है।[3]

चरणदास जी का चमत्कारी व्यक्तित्व साधना क्षेत्र के ही समान काव्य सर्जन के क्षेत्र में भी अद्भुत् एवं अद्वितीय है। इनमें काव्य प्रतिभा आध्यात्मिक तथा व्यवहारिक ज्ञान के साथ जन्मजात थी।[4] उनकी जीवनी से यह बात स्पष्ट है कि उन्हे शिक्षा दिलाने के लिए किये गये सभी प्रयास निष्फल हुए थे लेकिन जब उनके साहित्य का अवलोकन करते है तो हम पाते है कि उन्हे सभी वेदों, उपनिषदों, शास्त्रों का ज्ञान परिपूर्ण रूप से था तथा उनकी रचनाओं की सामग्री में भारतीय तत्व दर्शन एक बृहत्व कोष में समहित है। साहित्य के क्षेत्र में चरणदास जी के संस्कार का संचित परिणाम लगते है।[5]

चरणदास जी के लेखन का प्रारम्भ फतेहपुरी की गुफा के एकान्तवास के दौरान 21 वर्ष की अवस्था में प्रारम्भ हुआ था। खुद चरणदास जी का कहना था कि ''21 वर्ष की अवस्था में चैत्र पूर्णिमा, सोमवार विक्रम संवत 1781 को उन्होंने काव्य सर्जन की शुभ यात्रा प्रारम्भ की'' तथा इस संदर्भ में प्रथम कविता इसी समय प्रस्फुटित हुयी थी अर्थात् अपनी सर्वश्रेष्ठ कृति भक्ति सांगर की रचना से पूर्व उन्होंने लगभग 15 हजार बानियों की रचना की थी जिसमें से 5 हजार गुरू के नाम पर गंगा में प्रवाहित की दी तथा अन्य पांच हजार अग्नि को समर्पित हो गई। तथा शेष पांच हजार शिष्यों से प्राप्त हुयी है।[6]

चरणदास जी के जीवन चरित्र से जानकारी मिलती है कि 1779 वि. स. में गुरू दीक्षा के उपरान्त उन्होंने गुफा में कठोर साधना की तथा 36 वर्ष की आयु में 1796 वि.स. में वृन्दावन की प्रथम यात्रा की। इस समय उन्हे श्रीकृष्ण के रास परिसर सहित रासलीला के प्रत्यक्ष दर्शन हुए तथा गुरू शुक्रदेव मुनि के साथ भी इसकी विस्तार से ज्ञान गोष्ठी हुयी। संभवत उसी समय गुरू ने उन्हे भक्तिप्रचार, ज्ञानोपदेश, और काव्यसर्जन आदि के सम्बन्ध में आदेश दिये तथा सभी से ही बानी रचना का विधिवत आरम्भ हुआ।[7] जसराम जी के अनुसार वृन्दावन से वापस आकर वे परिक्षितपुरा में रहने लगे थे तथा वही से ही काव्य सर्जन व धर्म प्रचार का कार्य विधिवत होने लगा था।[8] लेकिन जसराम उपकारी के अनुसार वृन्दावन में आकर इन्द्रप्रस्थ खण्डगंज में रहना आरम्भ किया व वाणी रचना प्रारम्भ की। निष्कर्ष में यही कहा जा सकता है कि चरणदास जी का कवि जीवन 1781 वि.स. में आरम्भ हो गया था। और 1797 वि.स. तक वह अपरिचित प्रारम्भिक अवस्था में था इस तथ्य की पुष्टि चरणदास जी के शिष्य उपगारी जसराम जी ने अपनी कृति भक्तिवावनी में भी की है[8] इनका यह

कथन तर्क संगत है और गुरू सम्प्रदाय में भी मान्य है।[9] इनके अनुसार चरणदास जी ने वृन्दावन से आकर सर्वप्रथम व्रज चरित्र की रचना की तथा इसके बाद द्वितीय कृति के रूप में अमर लोक अखण्ड धाम वर्णन नामक ग्रन्थ रचा। इन दोनों ग्रन्थों के विषयों का ज्ञान व साक्षात्कार इन्हे वृन्दावन यात्रा के दौरान हो गया था। क्योंकि वहाँ उन्हे रासलीला व अमरलोक दोनों के दर्शन गुरू कृपा से प्राप्त हुए थे।[10] अतः स्वभाविक है कि प्रत्यक्ष प्राप्त ज्ञान और अनुभुति का चित्रन तत्काल करना उन्हें ठीक लगा और उसी को ध्यान में रखते हुए उन्होंने उनकी रचना कर डाली। इसीलिए चरित्र व अमरलोक उत्थान द्वितीय स्थान पर है।[11] इस तथ्य की पुष्टि इस तक से भी होती है कि चरणदास जी की प्राप्त रचनाऐं 21 है तथा उनकी तीन हजार वाणियाँ जो साधुओं का दी गई उनमें से कुछ ही प्राप्त हुई है बाकी की खोज की जानी बाकी है। इन कृतियों का रचनाकार तथा क्रम सर्वप्रथम रचना क्या है। यह विषय पर्याप्त मतभेद का हैं। तथा अधिकांश विद्वानों का यह मत है कि भक्तिसागर का रचनाकाल 1781 वि.स. है अगर ये स्वीकार करे तो यह मानना उचित होगा कि यही उनकी प्रथम कृति है। लेकिन यह सही नहीं है। क्योंकि यही एक सर्वविदित तथ्य है कि इन्होंने 21 वर्ष की अवस्था में लेखन आरम्भ किया था तथा उपलब्ध वाणियों और ग्रन्थों से पूर्व उन्होंने उन दस हजार वाणियों की रचना की जो गंगा व अग्नि को समर्पित कर दी गयी और इन वाणियों के निर्माण में कम से कम पाँच वर्ष तो लगे ही होगें।[12] अतः यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि 1781 वि.स. में कवि ने किसी ग्रन्थ की रचना नहीं की व भक्तिसागर भी बाद की रचना है।[13] सन्त चरणदास जी के क्रम निर्धारण में जसराम उपगारी का यह कथन और ग्रन्थ बहु बिस्तरे, जोग भक्ति गुरू ज्ञान भी हमारी मदद करता है।[14] जसराम उपगारी के तथ्य को ध्यान में रखते हुए 20वीं शताब्दी में श्री गुरू सम्प्रदाय के पुनउद्धारक के रूप में सम्मानित श्री सरसमाधुरी शरण ने भक्तिसागर के संस्करण में चरणदास जी रचनाओं के क्रम में भी वृजचरित्र वर्णन व अमरलोक अखण्ड धाम वर्णन को प्रथम व द्वितीय स्थान पर रखा है।[15]

अतः विभिन्न तथ्यों के आधार पर चरणदास जी की उपलब्ध रचनाओं का क्रम इस प्रकार है।

1. व्रजचरित्र वर्णन 2. अमरलोक अखण्डधाम वर्णन 3. धर्मजहाज वर्णन, 4.अष्टांग योग वर्णन 5. योग संदेह सागर वर्णन 6. राम स्वरोदय वर्णन 7. पंचापनिषद अर्थववेद भाषा 8. भक्तिपदार्थ वर्णन 9. भक्तिसागर वर्णन 10. मनविरक्तक करण गुरूसागर वर्णन 11. जागरण महा काव्य वर्णन 12. दान लीला वर्णन 13. माखन चोरी लीला वर्णन 14.काली नयन लीला वर्णन 15. मटकी लीला वर्णन 16. श्रीधर लीला वर्णन 17. कुरूक्षेत्र लीला वर्णन 18. नासकेत लीला वर्णन 19. ब्रहम सागर वर्णन 20. शुक्र वर्णन 21. कवित्त वर्णन

श्री चरणदास जी ने भक्तिसागर को छोड़कर अन्य किसी भी ग्रन्थ की रचनाकाल का संकेत नहीं दिया है इसलिए ग्रन्थों के रचनाकाल के निर्धारण तथा रचनाक्रम के निश्चय में बाह्य साध्यों को तथा चरणदास जी के जीवन और विचारधारा से सम्बन्ध घटनाक्रम को मूल आधार माना जाता है। अपने ज्ञान स्वरोदय नाम ग्रन्थ की अन्तिम पक्तियों में चरणदास जी ने इसी क्रम की पुष्टि की है।

जेग जुक्ति हरि भक्ति करि, ब्रहमज्ञान दृढ़ करि गहायों।

आत्म तत्व विचारीं के, अजया के मन सनि रहयों।[16]

चरणदास सम्प्रदाय के क्रम निर्धारण में हम यदि योग, भक्ति, ज्ञान के वर्णन विषय को माने तो सिद्ध होता है कि चरणदास जी की रचनाओं का क्रम निम्न था।

1. योग परक रचनाऐं – अव्यगंयोग वर्णन, योग सन्दह सागर, ज्ञान स्वरोदय आदि।
2. भक्ति परक रचनाऐं – भक्ति सागर, भक्ति पदार्थ वर्णन आदि।
3. दान लीला, माखनलीला मटकी लीला, बृजचरित्र आदि।
4. ज्ञान और वैराग्य विषयक रचनाऐं – पंचोपनिषद सार, मनस्विरक्त करण गुटकासार

5. धार्माचरण सम्बन्धी तथा उपदेशात्मक रचनाऐं – नासकेत लीला, धर्मजहाज, जागरण महात्मय अमरलोक अखण्डधाम वर्णन और शब्द।[17]

चरणदास जी के ग्रन्थों व परिचायात्मक विवरणों का उल्लेख पाश्चात्य और भारतीय विद्वानों में स्थान–स्थान पर किया है। पाश्चात्य विद्वानों के सर्व श्री जेम्स हेस्टिगज एच.एन. विलसन, विलियम कुक्स, सर जार्ज गिर्यसन (सम्पादक राजपूताना ग्जेटियर) मुख्य है तथा भारतीय विद्वानों में सर्वत्र क्षितिमोहन सेन, पीताम्बर बडवाल, रामकुलार वर्मा, प्रभुदत्त ब्रहमचारी, परशुराम चतुर्वेदी, शिवदयाल गौड़ ये सब विशेष उल्लेखनीय है।

श्री जेम्य हेस्टिगज के अनुसार :–

''चरणदास जी के मौलिक ग्रन्थों में भक्तिसागर, संदेह सागर, ज्ञान स्वरोदय, धर्मजहाज ब्रहमविधासागर तथा नासिकेतोपरिधान उल्लेखनीय है।''

श्री एच. एस. विल्सन के अनुसार –

''चरणदास जी के सन्देहसागर, धर्मजहाज ग्रन्थ प्रमाणिक रचनाऐं है।''

श्री विलयम कुक्स ने की सन्देह सागर व धर्म जहाज को श्रेष्ठ रचनाऐं माना है। सर जार्ज गिर्यसन ने भक्ति सागर, ज्ञानस्वरोदय, योगसंदेह सागर, धर्मजहाज, ब्रहम विद्यासागर और नसिकेतापाख्यान को चरणदास जी की प्रमाणिक रचनाऐं माना है।[19]

चरणदास जी की रचनाऐं चार तरह की है–

1. चरित्र , 2. कथानकपरक , 3. आध्यात्मिक , 4. स्पुट

प्रथम कोटि में बृजचरित्र माखनचोरी की, दान लीला, मटकी लीला आदि आती है। दूसरी में धर्मजहाज जागरणमहात्म्य, कुरूक्षेत्र लीला व नासकेतु लीला आदि आते है। तीसरी कोटि में भक्तिसागर, मनविरक्तकरण, पंचोपनिषदसार, बृहमज्ञान सागर और भक्ति पदार्थ समावेशित होते है तथा चौथी श्रेणी में विश्वास सत्यप्रियता, सौदार्य और श्रृद्धा के ग्रन्थ आते है जिनमें आदि स्वीकारार्य व काम, क्रोध, लोभ, मोह, माया, द्वेष, ईर्ष्या, अंहकार, मदिरापान, छलप्रपंच आदि निषेध विषय के रूप में समादिष्ट है।

चरणदास जी के ग्रन्थों में कृष्ण चरित्र ही मुख्य रूप से काव्य का केन्द्र बिन्दू है। व उसका आधार श्री मदभागवत है। इन्होंने श्रीमदभागवत् में वर्णित श्रीकृष्ण के जीवन की घटनाओं के वर्णनों के माध्यम से भक्तों में कृष्ण भक्ति व सदाचरण तथा सदाचारों का प्रसार व दूराचारण व दुष्यवृत्तियों के निरोध करने का प्रयास किया है।[20]

इनके दार्शनिक काव्यों में ज्ञान, योग, भक्ति, कर्म आदि का सुन्दर विवेचन है तथा बुद्धिवादी सिद्धान्त को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया है।

सन्त चरणदास जी के साहित्य ने वैराग्य ज्ञान, भक्ति, कर्म के किसी भी क्षेत्र को नहीं छोड़ा है बल्कि इन सबके सभी पहलूओं को समाहित करके समाजसुधार का भी प्रयास किया है। इनकी रचनाओं में वेद, उपनिषद, पुराण और दार्शनिक चिन्तन को भी काम में लिया है। साथ ही सूचियों, नागपंथियों, संतकवियों की अभिव्यक्त शैली को भी स्थान–स्थान पर अपनाया है। अतः इनकी सारसंग्रही तथा मधुसंचयी कृति लोकमंगल की भावना से अुनग्रहित होकर एक उत्कृष्ठ कोटी के साहित्य रचयिता के रूप में उन्हे प्रतिष्ठित करती है।

चरणदास जी के साहित्य में कही विरह की दशा की मार्मिक व्यथा का चित्रण है तो कही अदभुत रसात्मकता का वर्णन है। इनकी रचनाओं में संवाद के माध्यम से सभी साधनमूल एवं व्यवहारिक ज्ञान सम्बन्धी जिज्ञासाओं का सटीक समाधान किया गया है। इन्होंने कठिन से कठिन विषय को बडी सुगमता से हृदयगामी बनाया है। तथा अवधी, संस्कृत, पंजाबी, फारसी, अरबी भाषा का बहुत सुन्दर ढंग से उपयोग किया है।[21]

सन्त चरणदास की विभिन्न मुख्य रचनाऐं निम्न है –

बृजचरित्र –

वृन्दावन से आने के पश्चात् चरणदास जी कुछ दिनों अपनी माता के पास रहने के पश्चात् नंदराम जी के पास रहने लगे तथा कभी–कभी हरिप्रसाद जी के यहाँ परिक्षित पुरा चले जाया करते थे। इस अवधि में इन्होंने इस ग्रन्थ की रचना की। जिसकी पुष्टि चरणदास जी के समकालीन उनके कई शिष्यों ने की है।[22] चरणदास जी के जीवनी से यह सिद्ध होता है कि इस ग्रन्थ की रचना वि.स. 1797 या 1798 में हुयी थी। तथा इस समय इनकी आयु 37, 38 वर्ष थी।[23] इस ग्रन्थ के नाम के अनुसार इसका विषय ब्रजभूमि की महत्वा तथा राधाकृष्ण की रासलीला है। चरणदास जी के अनुसार इस वर्णन का आधार वाराहसंहिता है।[24] इस ग्रन्थ के माध्यम से सन्त ने बृजमण्डल, गोर्वद्धन महिमा, बृज के 12 वन, 12 उपवन, प्रसिद्ध स्थान प्राकृतिक सौन्दर्य[25], श्री राधाकृष्ण के सौन्दर्य व रूप, रासलीला सहित अनेक विषयों का अच्छा चित्रण किया है।[26] हालांकि इसकी भाषा व अभिव्यक्ति ज्यादा अच्छी नहीं है लेकिन फिर भी अपने आप में यह महत्वपूर्ण है। इस रचना में चरणदास जी ने चौपाई दोहा छन्दों का उपयोग किया है।[27]

(1) अमरलोक अखण्ड धाम वर्णन –

श्री चरणदास जी की काव्य रचनाओं में यह दूसरा ग्रन्थ है तथा रामरूप जी ने भी इसको दूसरा ग्रन्थ माना है।[28] भक्तिसागर में वर्णित विषय के आधार पर सरसमाधुरीशरण ने भी स्वीकार किया है कियह उनका द्वितीय रचना है।[29]

इस ग्रन्थ का रचनाकाल भी 1737–1738 वि.स. है। त्रिलोकी नारायण दीक्षित ने इसे कुरूक्षेत्र लीला के बाद की रचना माना है। इसका रचना काल 1812 वि.स. निर्धारित किया है उन्होंने कहा है कि किसी अन्तसाक्ष्य का अभाव तथा चरणदास जी के ग्रन्थ में निर्गुणपरक धारणा इसका काल 1812 वि.स. निर्धारित करती है। लेकिन दीक्षित जी का यह कथन व तर्क सही नहीं है।[30]

इस ग्रन्थ में अमरलोक नामक ऐसे लोक का वर्णन किया गया है जो अवर्णनीय तेजपूर्ण से युक्त, निस्सीम, कल्पवृक्षों से युक्त रत्नजड़ित व राजप्रसादों से सुसज्जित, समस्त विकारों से हीन अमर नर नारियों से पूर्ण तथा दिव्य विभूतियों से सम्पन्न है।[31] अमरलोक के रंगमहल में होने वाले किशोर कृष्ण व किशोरी राधा की रासलीला व दिव्य प्रेम लीला का वर्णन चमत्कृत करने वाला है।[32] इस ग्रन्थ में 198 छन्द, 52 दोहे तथा शेष चौपाईयां है। यह सुन्दर, चित्रात्मक वर्णन वाली प्रौढ कृति है जिसमें राधाकृष्ण के सौन्दर्य का वर्णन, रासनृत्य, अमरलोंक के दिव्य व अनिवर्चनीय घटा का बहुत अच्छा व मोहक वर्णन किया गया है। इस ग्रन्थ पर गीता का प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखता है।[33]

धर्मजहाज –

यह 139 दौहों तथा लगभग 500 पंक्तियों की रचना है। तथा इसमें गुरू व शिष्य के संवाद को वर्णित किया है। पारस्परिक मान्यता में यह चरणदास जी की क्रमशः तृतीय काव्यकृति थी तथा इसकी रचना उन्होंने अपना स्वतन्त्र सम्प्रदाय चलाने की मानसिक तैयारी के रूप में की थी क्योंकि इसके वर्णित विषय सगुण साधना मार्ग को प्रतिपादित करते थे।[34] इसका रचनाकाल 1800 वि.स. के आस–पास रहा होगा। इस ग्रन्थ की रचना का उद्देश्य बताते हुए चरणदास जी ने कहा है कि यह ग्रन्थ वास्तव में धर्मजहाज की जगह कर्म जहाज है[35] क्योंकि इसमें अच्छे कर्मों के आचरणों के अपनाने व दुष्कर्मों की निराकृति त्यागने का सन्देश दिया है तथा साथ ही भाग्यवाद, वर्णव्यवस्था का समर्थन व सगुण साधाना का प्रतिपावन किया है।[36]

अष्टांग योग वर्णन –

इस ग्रन्थ में 770 पंक्तियाँ व 333 दौहों का समावेश है तथा यह भी गुरू व शिष्य के संवाद के रूप में रचित है तथा इसका विषय अष्टांग योग का ज्ञान व स्वानुभूति है। योग के क्रम में इसमें चरणदास जी ने यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा ध्यान, समाधि, दृढयोग, मुडा और बन्ध आदि विषयों को विस्तार से वर्णदित किया है।[37] यह योग विद्या का एक पूर्ण ग्रन्थ है। जिसमें योग से सम्बन्धी कोई बात छूटी नहीं है। इसकी विशालता व पूर्णता की पुष्टि इस बात

से होती है कि इसमें कुम्भक के 8 प्रकारों व धारणा के षट प्रकारों, ध्यान व मुद्रा के अनेक प्रकारों का वर्णन किया गया है।[38] इसका मुख्य कारण स्वयं चरणदास जी का योगशास्त्र के बारे में स्वानुभूति ज्ञान होना था।[39] जहाँ तक इस ग्रन्थ के रचनाकाल का समय है तो चरणदास जी ने इसकी कोई तिथि नहीं दी है लेकिन इसकी कुछ पंक्तियों से पता पडता है कि वृन्दावन में श्री शुक्रदेव की ज्ञान गोष्ठी के कुछ समय पश्चात् इसकी रचना आरम्भ हो गयी होगी। इससे यह भी पता पडता है कि चरणदास जी इस समय तक योगसाधक के रूप में प्रतिष्ठित हो चूके थे तथा हो सकता है कि इस ग्रन्थ की रचना दस वर्ष के घास मण्डी के प्रवास के दौरान जिस समय वे एक योगसाधक के रूप में निखर रहे थे के समय की रही हो। अर्थात् इस प्रकार इस ग्रन्थ का रचनात्मक 1805 वि.स. के आस–पास होना चाहिए। इस ग्रन्थ में छन्द के रूप में चौपाईयां दोहों का प्रयोग मुख्य है व इसकी भाषा की अभिव्यक्ति श्रेष्ठ स्यवर है।[40]

योग सन्देह सागर –

यह भी इसी क्रम में रचित कृति है तथा दोनों एक–दूसरे की पूरक है। इस ग्रन्थ के माध्यम से अष्टांग योग की साधाना में पारगंत साधकों को प्रश्नों के माध्यम से परीक्षा ली गयी है। यह एक गूढ कृति है तथा योग पण्डितों के लिए भी एक चुनौती के रूप में प्रस्तुत की गयी है।[41]

ज्ञान स्वरोदय –

यह चरणदास जी की अत्यन्त लोकप्रिय व बहुचर्चित कृति है। शुक्रसम्प्रदाय में यह मान्यता थी कि चरणदास जी को स्वरोदय प्राप्त था इसलिए उनकी सभी भविष्यवाणियाँ सही निकलती थी।[42] चरणदास जी की यह रचना उनके ज्योतिष ज्ञान, तन्त्रविद्या, प्राणवायु की परख व प्राणायाम साधना की सिद्धि की परिचायक है। इसमें गहन दार्शनिक तत्वों को निवेचित किया है तथा यह अपने आप में पूर्ण शास्त्रीय ग्रन्थ है। जिसमें गम्भीर ज्ञान के लिए कठोर वायु साधना अत्यन्त आवश्यक है बतायी गयी है इस ग्रन्थ में ज्ञान व योग माध्यम से स्वरोदय को एक गर्भ स्त्री के गर्भ में लडका हो या लडकी इसका बढे सरल ढंग से समझाया है।[43]

डॉ त्रिलोकीनारायण दीक्षित ने इसका काल 1843 वि.स. बताया है। लेकिन यह सही नहीं लगता है क्योंकि सन्त चरणदास 1839 वि.स. में देहत्याग कर चुके थे। इस ग्रन्थ में 228 दोहे तथा 239 छन्द है।[(2)] अतः इस ग्रन्थ में मुख्यतः दोहे ही है तथा बीच–बीच में चौपाई, कुण्डलियाँ तथा छपछय छन्द आदि भी है।

पंचोपनिषद अर्थवणवेद भाषा –

इसके छन्दों की संख्या 114 है व इस ग्रन्थ का एक नाम पंचोपनिषद् साद भी है। इसमें 5 उपनिषदों का सांराश पद्य शैली में दिया गया है। ये निम्न है। हंसनादोपनिषद् 2. सर्वोपनिषद् 3. तत्वयोगोपनिषद् 4. योगशिखोपनिषद् 5. तेजबिन्दूउपनिषद् ।[3]

1. हंसनादोपनिषद् – इसका विषय अद्वैतासिद्धान्त हंस व सोंह का स्वरूप अजपाजप, प्रणव की महत्ता, अनाहतनाद श्रवण विधि, दश प्रकार के नादों का स्वरूप व उनकी पहचान आदि है। 2. **सर्वोपनिषद् –** इसके विषय बन्धन मुक्ति, विद्या, अविद्या, जाग्रत स्वप्न तुरियावस्थाऐं, पंचकोष, जीव आत्मा ब्रह्म का स्वरूप एवं उनका परस्पर सम्बन्ध आदि है। 3. **तत्वयोगोपनिषद् –** इसके विषय परब्रह्म की सर्वव्यापकता, प्रणव की श्रेष्ठता, इसके जप की विधियों और उसका प्रमाण आदि है। 4. **योगशिखोपनिषद् –** यह लघु ग्रन्थ है तथा इसके विषय शरीर के स्थित नौ द्वारा पंचदेवता नदियों, ज्योति मण्डलों आदि है। 5. **तेजबिन्दूपनिषद् –** इसके विषय इन्द्रियाँ, उनकी प्रबलता, जीवात्मा की अवस्थाऐं, ब्रह्म की अखण्डता, गुण–वर्ण–जाति–नाम–विहीनता आदि है।[45]

ये सभी उपनिषद् ततद् नाम के उपनिषदों का सांराश है तथा सकता है कि चरणदास जी को अध्ययन के समय यह विचार आया हो कि इनको सांराशित करके जन भाषा में जनहित के लिए प्रस्तुत किया जाना चाहिए व आवश्यक है

इसलिए ही उन्होंने ऐसा किया हो। इसकी पुष्टि स्वयं द्वारा इस प्रकार है कि जिज्ञासु जन की ज्ञानपिपासा को तृप्त करने के लिए उन्होंने इस ग्रन्थ की रचना की[46] डॉ. दीक्षित ने इसकी रचना 1844 वि.सं. माना है।[47] लेकिन यह तिथि सत्य नहीं है क्योंकि इस समय चरणदास जी जीवित ही नहीं थे। यह रचना योग, ज्ञान भक्ति का पूर्ण आधार है। अतः यह स्वरोदय के पश्चात् अस्तित्व में आयी होगी और इसका रचना काल 1815 वि.सं. से 1820 वि.सं. के मध्य के बीच रहा होगा। क्योंकि इस समय तक चरणदास जी की योग के साथ ज्ञान के क्षेत्र में भी परिपक्वता आ चुकी थी। इस समय इनके पास सभी धर्म, वर्ग के लोग सत्संग व वाद–विवाह के लिए आते थे तथा उन्हें इन सबके लिए सब धार्मिक ग्रन्थों वेदों, पुराणों, उपनिषदों, कुराणों के ज्ञान की आवश्यकता महसूस हुयी होगी। इसलिए उन्होंने उनका अध्ययन करके अपनी कृतियों को मूर्तरूप दिया। चरणदास जी के ये ग्रन्थ अनुवाद मात्र नहीं बल्कि इसमें भाषा का बहुत अच्छा उपयोग किया है।[48]

1. भक्ति पदार्थ – चरणदास जी का यह ग्रन्थ भक्ति के स्वरूप की विवेचना के साथ–साथ उसके साधक व बाधक तत्वों की विवेचना करता है। इस ग्रन्थ के विषय भक्ति की महत्वा[49] साधुसंतों की महिमा, ब्रह्म का स्वरूप व निरूपण,[50] अवधाभक्ति विवेचन, नाममहिमा, सुरति, पति भक्ति, नारी का यथार्थ रूप, पंडित, शील, दया, सत्य, भक्ति के साधक, षड्विकार जैसे बाधक विचार है।[51] यह ग्रन्थ अनेक अंगों में विभाजित है व प्रत्येक पृष्ठ पर 24 पंक्तियाँ है व कुल 95 पृष्ठ है। अपने विषय, प्रतिपादन शैली, भाषा प्रयोग की दृष्टि से यह उनकी उत्कृष्ण रचनाओ में एक गिनी जाती है। भक्ति शास्त्र के सम्बन्ध में यह एक मुख्य आधार ग्रन्थ है। भक्ति साधना से सम्बन्धित कोई भी ऐसा तथ्य नहीं है जो इसमें उपस्थित नहीं है। कठिन विषय को स्पष्ट तथा श्रेष्ठ बनाने के लिए इसमें अर्न्तकथाओं, प्रतीकों व उदाहरणों को प्रयोग में लिया गया है तथा इस कृति के माध्यम से अपनी भक्ति साधना पद्धति का शास्त्रीय पक्ष प्रस्तुत करके चरणदास जी ने मधुर भक्ति का एक आधार प्रस्तुत किया है।[52] इस ग्रन्थ की रचना तब की गयी थी जब उनकी प्रसिद्धि काफी हो चुकी थी तथा ज्ञान ग्रन्थों से यह बता पड़ता है कि 1821 वि.सं. को 61 वर्ष की अवस्था में दिल्ली के शुक्रदेवपुरा निवास के दौरान इस ग्रन्थ की रचना की गयी थी। इस समय चरणदास जी सगुण साधना व वैध्यी उपासना व राधाकृष्ण के युगल रसोपासना को पूरी तरह अपना चुके थे तथा राधावल्लभीय, साधना के अनेक उत्सव पर्व का आयोजन भी उनके मन्दिर में आयोजित किया जाने लगा था। इसकी रचना लगभग 325 छन्दों में समाहित है तथा दोहों का भी उपयोग किया है। भक्तिसागर में इसका उल्लेख है।[53]

इन ग्रन्थों के अलावा भी उन्होंने निर्गुण और सगुण भक्ति पर कई अन्य ग्रन्थ भी लिखे, जैसे – 1. मनविरक्त करण गुटका सार 2. ब्रह्मज्ञान सागर 3. भक्तिसागर 4. जागरण माहात्मय 5. दानलीला 6. माखन चोरी लीला 7. कालीमन्थन लीला 8. मटकी लीला 9. श्रीधर ब्राह्मण लीला 10. कुरूक्षेत्र लीला 11. नासकेत लीला वर्णन 12. पाण्डव यज्ञ लीला।

अतः संत चरणदास जी का साहित्य में योगदान अत्यन्त समृद्ध, अमूल्य, उल्लेखनीय, सराहनीय रहा तथा इनके साहित्य की सजीवता आज भी विद्यमान है।

सन्दर्भ सूची –

1. ध्यानेश्वर जोगजीत, लीला सागर,, पृ.सं. 205
2. श्याम सुन्दर शुक्ल, चरणदासी सम्प्रदाय और उसका साहित्य, पृ.सं. 16
3. श्याम सुन्दर शुक्ल, चरणदासी सम्प्रदाय और उसका साहित्य, पृ.सं. 21
4. श्याम सुन्दर शुक्ल, चरणदासी सम्प्रदाय और उसका साहित्य –पृष्ठ–132
5. ध्यानेश्वर जोगजीत, लीलासागर–पृष्ठ–47, 48
6. स्वामी चरणदास, भक्ति सागर–पृष्ठ–478–परिशिष्ट–362
7. स्वामी रामरूप, गुरूभक्ति प्रकाश–पृष्ठ–95

8. स्वामी रामरूप, गुरूभक्ति प्रकाश–पृष्ठ–156

9 जसराज उपकारी, भक्तबावनी–पाण्डुलिपि–पृष्ठ–221

10. भक्तबावनी–पाण्डुलिपि–पृष्ठ–221–दोहा संख्या–107–परिशिष्ट–363

11.भक्तबावनी–पाण्डुलिपि–पृष्ठ–222–दोहा संख्या–110–परिशिष्ट–364

12 श्यामसुन्दर शुक्ल, चरणदासी सम्प्रदाय और उसका साहित्य–पृष्ठ–134

13. श्यामसुन्दर शुक्ल,चरणदासी सम्प्रदाय और उसका साहित्य–पृष्ठ–134

14. जसराज उपकारी, भक्तबावनी–पृष्ठ संख्या–221–दोहा संख्या, 118

15. स्वामी चरणदास, भूमिसागर संस्करण 1966 ई. में यही क्रम है।

16. स्वामी चरणदास, ज्ञान स्वरोदय (भक्तिसागर)–पृष्ठ–130

17. चरणदासी सम्प्रदाय और उसका साहित्य–पृष्ठ–838 नवभक्त माल–पृष्ठ–296

18. जीवन चरित्र सन्त चरणदास–पृष्ठ–32

19. त्रिलोकी नारायण दीक्षित जीवन चरित्र सन्त चरणदास–पृष्ठ–33

20. चरणदासी सम्प्रदाय और उसका साहित्य–पृष्ठ–162

21. चरणदासी सम्प्रदाय और उसका साहित्य–पृष्ठ–163

22. गुरूभक्ति प्रकाश–पृष्ठ–41–परिशिष्ट–365

23. चरणदासी सम्प्रदाय और उसका साहित्य –पृष्ठ–138

24. भक्तिसागर–पृष्ठ–3

25. भक्तिसागर (ब्रजचरित्र वर्णन ग्रन्थ)–पृष्ठ–5

26. भक्तिसागर (ब्रजचरित्र वर्णन ग्रन्थ)–पृष्ठ–6, 7, 10

27. श्याम सुन्दर शुक्ल, चरणदासी सम्प्रदाय और उसका साहित्य –पृष्ठ–139

28. गुरूभक्ति प्रकाश–पृष्ठ–41

29. भक्तिसागर (अमरलोक अखण्ड धाम)–भूमिका–पृष्ठ–3

30. श्याम सुन्दर शुक्ल, चरणदासी सम्प्रदाय और उसका साहित्य –पृष्ठ–139

31. भक्तिसागर, (अमरलोक अखण्ड धाम)–पृष्ठ–368

32. पृष्ठ–364

33. श्याम सुन्दर शुक्ल, चरणदासी सम्प्रदाय और उसका साहित्य –पृष्ठ–140, 169

34. श्याम सुन्दर शुक्ल, चरणदासी सम्प्रदाय और उसका साहित्य–पृष्ठ–190

35. भक्तिसागर (धर्म जहाज वर्णन)–पृष्ठ–59

36. भक्तिसागर–पृष्ठ–55–परिशिष्ट–366

37. भक्तिसागर (अष्टांगयोग वर्णन)–पृष्ठ–71

38. भक्तिसागर (अष्टांगयोग वर्णन)–पृष्ठ–79

39. भक्तिसागर (अष्टांगयोग वर्णन)–पृष्ठ–104–366

40. भक्तिसागर (अष्टांगयोग वर्णन)–पृष्ठ–53–परिशिष्ट–367

41. भक्तिसागर (योग सन्देह सागर)–पृष्ठ–105–परिशिष्ट–368

42. स्वामी रामरूप, गुरूभक्ति प्रकाश–पृष्ठ–81–परिशिष्ट–369

43. भक्ति सागर (ज्ञान स्वरोदय वर्णन) पृ.सं. 122

44. श्याम सुन्दर शुक्ल, चरणदासी सम्प्रदाय और उसका साहित्य, पृ.सं. 144

45. प्रश्नोपनिषद्, श्लोक सं. 2

46. भक्ति सागर, तन्वयोगोपनिषद्, पृ.सं. 174,175

47. सन्त चरणदास, पृष्ठ–119

48. श्याम सुन्दर शुक्ल, चरणदास सम्प्रदाय और उसका साहित्य, पृ. 145

49. भक्तिसागर, पृ.सं. 162

50. भक्ति नगर, (भक्ति पदार्थ वर्णन), पृ.सं. 210,212

51. भक्तिसागर (भक्ति पदार्थ)–271, पृ.सं. 238, 206,177,202,205,209

52. भक्तिसागर (भक्ति पदार्थ), पृ.सं. 162, परिशिष्ट–372

53. भक्तिसागर (भक्ति पदार्थ), पृ.सं. 257